ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

नागौद राज्य (म.प्र.) की भौगोलिक पृष्ठभूमि

रेखा सिंह सोलंकी
शोधार्थी अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा म.प्र.

सारांश

नागौद राज्य भारत के मध्य प्रदेश राज्य के मध्य भाग में स्थित है। इसकी स्थिति 24° 34' 12.6444" उत्तर और उत्तरी अंक्षाश से 80° 34' 47.8128" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।प्राकृतिक संपदा और सुषमा से सम्पन्न नोगोद राज्य को भौगोलिक दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। दक्षिण पश्चिम का विस्तृत पर्वतीय क्षेत्र एवं उत्तर पूर्व का कृषि मैदान राजवंशों के शासन काल में नागौद का दक्षिण पश्चिमी भाग सघन वन प्रान्त या इस भाग में वन्य प्राणियों के अलावा आदिम जातियों के छोटे छोटे गांव थे। नागौद राज्य विन्ध्याचल की उपात्काओं के मध्य स्थित है। पूर्व की ओर इसकी सीमा टमस नदी को स्पर्श करती है। दक्षिण में नागौद राज्य मैहर की पहाडियों तक फैला हुआ है, पश्चिम की ओर इस राज्य की सीमाऐं विन्ध्याचल पर्वत की ओर पन्ना श्रेणी तक फैली हुई है। उत्तर दिशा में सिंहपुर गांव तक इस राज्य की सीमा है। उत्तर दिशा में सिंहपुर गांव तक इस राज्य की सीमा है। राज्य का दक्षिणी भाग पहाडी और जंगली है इस क्षेत्र में खेती नही होती किन्तु उत्तर पूर्वी भाग खेती के योग्य है। नदियों का ढाल उत्तर पूर्व की ओर है। राज्य का संपूर्ण भाग विन्ध्यांचल पठार के अंर्तगत आता है। मानचित्र के अनुसार यह क्षेत्र मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। आधुनिक बघेलखं डमें रीवा, सतना सीधी शहडोल एवं उमरिया जिले आते है। मध्यप्रदेश का उत्तर पूर्वी क्षेत्र प्राचीन काल से ही अनेक नामों से संबोधित होता रहा है। नागौद क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 501 वर्ग मील (1300 कि.मी.^{2}) है।क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं एवं प्राकृतिक संपदा ने गुप्त साम्राज्य के स्वर्ण युग होने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। समुद्रगुप्त सम्राटों ने भी इस क्षेत्र पर अधिपत्य बनाएं रखा। नागौद राज्य के अंतिम शासक परिहार हुए। परिहारों का शासन भोजराज परिहार (1492–1503) ई. से प्रारंभ होता है चैनसिंह (1720–1748) में विस्तृत भू भाग का प्रबंध उॅचेहरा से नही हो पा रहा था अतः राज्य के मध्य में राजधानी बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई 1742 में नागौद राजधानी की स्थापना हुई। नागौद का पुराना नाम नामतारा है।

मुख्य शब्दः नागौद, भौगोलिक पृष्ठभूमि, नर्मदाघाटी, भौतिक रचना, भू–वैज्ञानिक नदी, जलवायु, भूगर्भशास्त्र सम्बन्धी पृष्ठभूमि, प्राकृतिक विस्तार, मध्य–प्रदेश, स्थलाकृतिक आधार, स्वाभाविक विस्तार, भौगोलिक दृष्टि से विस्तार भू–वैज्ञानिक आधार, सतपुड़ा, भूगर्भशास्त्र सम्बन्धी पृष्ठभूमि।

प्रस्तावना

नागौद राज्य का धरातलीय स्वरूप विविधता से युक्त है एवं इसका इतिहास समृद्धशाली एवं भूमि अत्याधिक उर्वरा युक्त है जिसके कारण इस जनपद का मुख्य क्षेत्र समतल एवं कृषि के योग्य है नागौद राज्य भारत के मध्य प्रदेश राज्य के मध्य भाग में स्थित है। इसकी स्थिति 24° 34' 12.6444" उत्तर और उत्तरी अंक्षाश से 80° 34' 47.8128"पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद का आकार चतुष्टीयकोण है जो पूर्व से पश्चिम दिशा में लम्बाकार में फैला हुआ है। नागौद की समुद्र सतह से औसत ऊंचाई लगभग 317 मीटर है।

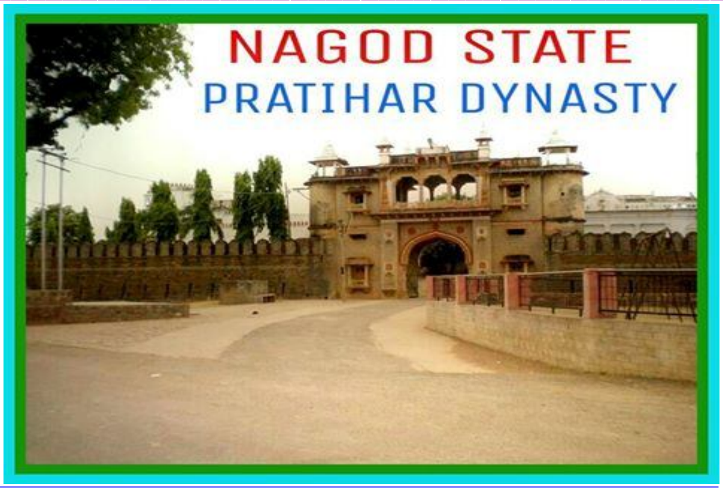

धरातलीय स्वरूप

प्राकृतिक संपदा और सुषमा से सम्पन्न नागौद राज्य को भौगोलिक दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। दक्षिण पश्चिम का विस्तृत पर्वतीय क्षेत्र एवं उत्तर पूर्व का कृषि मैदान राजवंशों के शासन काल में नागौद का दक्षिण पश्चिमी भाग सघन वन प्रान्त या इस भाग में वन्य प्राणियों के अलावा आदिम जातियों के छोटे छोटे गांव थे। नागौद राज्य विन्ध्याचल की उपात्काओं के मध्य स्थित है। पूर्व की ओर इसकी सीमा टमस नदी को स्पर्श करती है। दक्षिण में नागौद राज्य मैहर की पहाडियों तक फैला हुआ है, पश्चिम की ओर इस राज्य की सीमाऐं विन्ध्याचल पर्वत की ओर पन्ना श्रेणी तक फैली हुई है। उत्तर दिशा में सिंहपुर गांव तक इस राज्य की सीमा है। उत्तर दिशा में सिंहपुर गांव तक इस राज्य की सीमा है। राज्य का दक्षिणी भाग पहाडी और जंगली है इस क्षेत्र में खेती नही होती किन्तु उत्तर पूर्वी भाग खेती के योग्य है। नदियों का ढाल उत्तर पूर्व की ओर है। राज्य का संपूर्ण भाग विन्ध्यांचल पठार के अंर्तगत आता है। मानचित्र के अनुसार यह क्षेत्र मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। आधुनिक बघेलखंड में रीवा, सतना सीधी शहडोल एवं उमरिया जिले आते है। मध्यप्रदेश का उत्तर पूर्वी क्षेत्र प्राचीन काल से ही अनेक नामों से संबोधित होता रहा है। रामायण काल में यह भू–भाग कोशल प्रांत के अंतर्गत था।

पुराण युग

पुराण युग में इस प्रदेश के दो भाग थे – मेकल प्रदेश एवं विराट प्रदेश इस प्रकार इस प्रकार पुराण युग में बघेल खंड के उत्तर और दक्षिण दो भाग थे। महाभारत में भी इस बात का उल्लेख मिलता है कि विराट संघ मत्यस्य प्रदेश के अंतगर्त था। गुप्त युग में यह आटविक राज्य के नाम से जाना जाता था। गुप्तों के पहले यह क्षेत्र कौशाम्बी के मद्यों के अधिकार में था।

हर्ष के समय उत्तरापथ के अंतगर्त यह क्षेत्र सम्मलित था। कल्चुरी काल में यह क्षेत्र डाहल आदि नाम से संबोधित किया जाता था। कालांतर में इस क्षेत्र के दो भाग बुंदेलखंड एवं बघेलखंड हो गये। व्याघ्रदेव ने तेरहवीं शताब्दी में कालेजर के पार्श्ववर्ती क्षेत्र में अपना राज्य स्थित किया और बघेल खंड की नीव डाली इससे स्पष्ट होता है कि बधेल खंड नाम का प्रयोग सर्वप्रथम 1233–34 ईसवी में हुआ। प्राकृतिक दृष्टि से बघेल खंड को दो भागों उत्तरी बघेलखंड एवं दक्षिणी बघेल खंड में विभाक्त किया जा सकता है। उत्तरी बघेल खंड का उत्तरी भाग कैमूर के उत्तरी का भाग है जो विन्ध्यचल कगार प्रदेश का पूर्वी भाग है। इस क्षेत्र में रीवा व सतना जिले आते है। उत्तरी बघेल खंड को तीन प्राकृतिक विभागों में बॉटा जा सकता है रीवा प्रदेश निचला मैदान क्षेत्र तथा भाण्डेर का पठार । भाण्डेर का पठार उत्तरी बघेलखंड का पश्चिमी भाग है।

भाण्डेर पठार का सबसे बडा नगर है सतना है जो टोन्स की सहायक नदी सतना के किनारे बसा ळें इस पठार का दूसरा महत्वपूर्ण नगर मैहर है भाण्डेर पठार का तृतीय बड़ा नगर ऊँचेहरा एवं चौथा नागौद है । वर्तमान समय में नागौद तहसील मुख्यालय है जो राजमार्ग 6 पर सतना और पन्ना के मध्य भाण्डेर पठार के उत्तरी समतल क्षेत्र पर स्थित हैं।

पश्चिमी भारत एवं मध्य भारत को कौशाम्बी प्रयाग वाराणसी पाटलीपुत्र को जोडने वाला मार्ग इस क्षेत्र से गुजरता है इस प्रकार यह क्षेत्र मार्गो के विकास के कारण आर्थीकरण से प्रभावित हुआ एवं साथ ही जंगली दुर्गम क्षेत्रों में अपने मूल को बनाएं रखा। आर्थिकरण के फलस्वरूप सभ्यता के विकास को गति प्रदान हुई जिससे धीरे धीरे सम्राटों का ध्यानर्कषण होने लगा।

इस क्षेत्र की वन संपदा एवं खनिज संपदा ने भी क्षे.त्र के विकास में योगदान दिया। चट्टानी पत्थरों से अनेक मठों मंदिरों का निर्माण हुआ। राज्य में भरहुत स्तूप कभी निर्माण हुआ। प्रथम सदी ईस्वी में उत्तरी भाग बाकाटक उच्चकल्प महाराज परिब्राजकों भारशिवों के अधिकार में रहा तो वही दक्षिणी खंड मेकल के पाण्डुओं से शासित रहा। राज्य का भूमरा मंदिर भारशिवों से संबंधित हैं। क्षेत्र की भौगौलिक विशेषताओं एवं प्राकृतिक संपदा ने गुप्त साम्राज्य के स्वर्ण युग होने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। समुद्रगुप्त सम्राटों ने भी इस क्षेत्र पर अधिपत्य बनाएं रखा। नागौद राज्य के अंतिम शासक परिहार हुए। परिहारों का शासन भोजराज परिहार (1492–1503) ई. से प्रारंभ होता है चैनसिंह (1720–1748) में विस्तृत भू भाग का प्रबंध उॅचेहरा से नही हो पा रहा

था अतः राज्य के मध्य में राजधानी बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई 1742 में नागौद राजधानी की स्थापना हुई। नागौद का पुराना नाम नामतारा है।

पवर्त श्रेणी

राज्य का संपूर्ण भाग विन्ध्यांचल पवर्त श्रेणी के अन्तर्गत आता है अतः राज्य की जलवायु विन्ध्यांचल से भिन्न नहीं है। यहॉ सभी श्रद्वाओं का आगमन विन्ध्य के अन्य हिस्सों की भाती होती है। वर्षा का वार्षिक औसत 35'' से 40'' है। अधिकांश वर्षा जुलाई और अगस्त माहों में होती है। शीतकाल में वर्षा प्रायः नहीं होती। कभी–कभी पश्चिमी भाग में तूफानी फुहाड पड़ती है।

नागौद राज्य की जलवायु

नागौद राज्य की जलवायु गर्मतर है। ग्रीष्म में लू चलती है। ठड में यह अधिक ठंड और गर्मी में अधिक गर्मी पड़ती है। 7वीं शती में इस क्षेत्र का भ्रमण करने वाले चीनी यात्री व्हेनसांग ने यहां की जलवायु को समशीतोष्ण और आनंददायक लिखा है जिसकी पुष्टि समुद्रगुप्त के एरण स्तंभलेख से भी होती है। गुप्तकाल में संभवतः इसी अनुकूल जलवायु के कारण नचना भूमरा आदि स्थानों में मंदिरों का निर्माण हुआ।

जलवायु जलवायु एक भौगोलिक तत्त्व है, जिसका प्रभाव मानवीय क्रियाओं पर सर्वाधिक होता है। अनुकूल जलवायु ही संपूर्ण आर्थिक विकास का आधार है। मनुष्य के आवास, भोजन, वस्त्रों एवं कृषि विकास हेतु और अन्य आर्थिक क्रियाएं सभी जलवायु पर निर्भर करती है। जलवायु स्थिति, उच्चावचन प्राकृतिक वनस्पति, मृदा जलराशियों द्वारा प्रभावित होती है।

तालिका संख्या–1 नागौद की जलवायु

क्र. सं.	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक	
1.	अधिकतम तापमान से.ग्रे.	26.8	30.3	35.3	40.3	42.5	38.1	31.4	29.7	31.9	33.5	30.7	27.3	3.2
2.	न्यूनतम तापमान से.ग्रे.	8.2	11.1	15.6	21.4	25.9	26.1	23.9	23.1	22.5	17.9	12.4	8.6	18.6
3.	अपेक्षित आर्द्रता प्रतिशत	74	64	50	40	39	66	85	90	84	70	70	76	67
4.	पवन	2.4	3	3.8	4.4	5.9	8	6.8	6	3.8	2.2	2.2	2	4.2
5.	वर्षा मि.मी.	1.1	17.3	12.1	6.2	7	168.9	334.8	423.6	160.8	23.5	14.3	12.6	119.21

नागौद की जलवायु सामान्यतः शुष्क एवं ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर सामान्यतः पूर्ण जलवायु सुखद मानी जाती है। सर्वेखित क्षेत्र की जलवायु तालिका संख्या–1 द्वारा प्रदर्शित है–

जनपद को एक वर्ष में चार ऋतुओं का सामना करना पड़ता है। प्रथम शीत ऋतु जो मध्य नवम्बर से प्रारम्भ होकर फरवरी के अन्तिम सप्ताह तक रहती है। इसके बाद ग्रामीण ऋतु की शुरूआत होती है जो मार्च महीने से प्रारम्भ होती है। तीसरी ऋतु जून के मध्य से सितम्बर के अन्त तक की अवधि है, जो दक्षिणी पश्चिमी मानसून का मौसम है एवं चौथी अक्टूबर से प्रारम्भ होकर नवंबर के प्रथम सप्ताह तक मानसून मौसम के अवसान की अवधि कहलाती है। (तालिका–2) द्वारा नागौद जनपद की वार्षिक ऋतु–

तालिका–2

नागौद की वार्षिक ऋतुएं श्रेणी	ऋतु	माह
प्रथम	शीत ऋतु	मध्य नवंबर से फरवरी के अंतिम सप्ताह तक।
द्वितीय	ग्रीष्म ऋतु	मार्च से जून के मध्य तक
तृतीय	मानसून	मध्य जून से सितम्बर तक
चतुर्थ	मानसून मौसम के अवसान	अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक।

नागौद राज्य में वन एवं पहाड़

नागौद राज्य वनों एवं पहाड़ो से आच्छादित है। राज्य में 18 पहाड़ो के अवशेष उपलब्ध है।

राज्य का कुशला पहाड़ उचेहरा के दक्षिण में राज्य का सबसे ऊँचा पहाड़ है। समुद्रतल से इसकी ऊँचाई लगभग 2078 फीट है।

चुनहा के समीप ही दरकना पहाड़ है जिसकी ऊँचाई 1860 फिट है। पहाड़ पर ट्रिगनामेटिकल सर्वे का मुनारा है। खुरदहा के समीप बटुरी पहाड़ है। बटुरी में सघन वन है। लेड़हरा पहाड़ नागोद ऊँचाई मार्ग पर स्थित पिथौराबाद के पास है। भरहुत ग्राम के समीप लाल पहाड़ है इसकी तलहटी पर प्रसिद्ध भरहुत स्तूप था। पहाड़ की ऊँचाई 1869 फिट है। सतना पतौडा मार्ग पर सेन्दुरिया पहाड़ पतौरा के समीप हैं। सेन्दुरिया पहाड़ पर ही प्रसिद्ध प्रतियानदायी का मंदिर है। मामा भैन नाम का पहाड़ अमदरी के समीप स्थित है। शंकरगढ़ पहाड़ गोबराव नामक ग्राम के समीप चोटी दार पहाड़ है जिसकी ऊँचाई 1796 फीट है। भरुहरा पहाड़ भूमरा के पास स्थित है । कर्दमन पहाड़ सुरदहा ग्राम के समीप है। स्थानीय लोग इसे कुरदरा भी कहते है। झरही मनमनियों पहाड़ परसमनिया के समीप स्थित है। राजा बाबा पहाड़ परसमनिया के समीप स्थित है।

भडेड़ पहाड़ पनिहाई से अमकुई ग्राम तक श्रेणीबद्ध रू* से फैला हुआ है। नागदमन पहाड़ परसमनिया के दक्षिण पश्चिम की ओर स्थित है। परिहट के समीप छत्राकार रूप में छताई दायी पहाड़ विद्यमान है। सन्यासी बाबा पहाड़ परसमनियॉ पठार के नाम से प्रसिद्ध है। यहां पर गुप्त कालीन भूमरा का प्रसिद्ध मंदिर समीप स्थित है। सम्हराटोंग पहाड़ के नाम से प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। सम्हराटोग पहाड़ श्यामनगर के समीप स्थित हैं। धरोतहा पहाड़ मौजा खाम्हा में है

वन किसी भी राज्य की अमूल्य संपदा है जो ना केवल प्रकृति को रमणीय बनाते है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ता प्रदान करते है। वनों से प्राप्त विविध वनोपज एवं इसके अन्य उपयोगों ने देश एवं राज्यों की आर्थिक स्थिति को मजबूती दी है। वनों के फलते–फूलते नाना विधि के वृक्ष तथा वनस्पतियां जहां प्राकृतिक संतुलन बनाने में सहायक है वही पर्यावरण सुरक्षा तथा जीवन रक्षक औषधियों के निर्माण में भी उपयोगी है।

नागौद राज्य में नदियां

भारत के आर्थिक विकास में नदियों का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। नदियों यहां आदिकाल से ही मानव के जीवन और गतिविधियों का साधन रही है।

किसी भी क्षेत्र का अपवाह तंत्र वहा का धरातलीय आकृति और जलवायु से प्रवाहित होता है। यहां के जल प्रवाह तंत्र में छोटी बड़ी अनेक नदियां सम्मलित है जो इस क्षेत्र की धरातलीय बनाबट के अनुरूप प्रवाहित होती रही है। प्राचीन काल से ही सभ्यता और संस्कृति के उत्पत्ति विकास व विस्तार में नदियां का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

नागौद राज्य में 14 नदियां है सतना नदी का उद्गम अजयगढ़ पहाड़ से हुआ है। राज्य की उत्तरी सीमा बनाकर टोंस में मिल जाती है। अमरन नदी विरवा कुरेही के बीच दुदियासेहा से निकलती है। कतकोन के साथ सतना नदी में मिल जाती है।

बरूआ नदी झरही मनमानियां परसमनियां पहाड़ से निकलती है करही के पास यह टोन्स में जा मिलती है। कमरों (कर्दमिला) यह नदी सुरदहा पहाड़ से निकलती है। करारी नदी ऊॅचेहरा की पहाड़ी महाराजपुर से निकलकर बडखेरा के पास टोन्स नदी में मिल जाती है।पटना नदी महराजपुर के पहाड़ से निकलकर इचौल के समीप टोन्स में जा मिलती है। बटैया नदी महाराजपुर से निकलकर घोरहटी के पास सतना नदी में मिल जाती है। नन्दता महाराजपुर पहाड़ से निकलकर बटैया नदी में मिल जाती है। महानदी शहपुरा के पास से निकलकर रीवा राज्य के सोन नदी में जा मिलती है। राजगढ़ नदी जबलपुर से निकलकर हरदुआ के पासमहानदी में मिल जाती है। स्वरगुवा नदी रामपुर के पास निकलकर टोंस नदी में मिल जाती हैं। टेढ़ा नदी ढ़रकना पहाड़ से निकलकर चंदकुआ के पास अमरन में जा मिलती है। मगरैला नदी बटैया ग्राम के पास से निकलकर बिकरा के पास अमरन में मिल जाती हैं। तमसा नदी (टोन्स) डा सरकार और प्रो. अली तमसा नदी को आधुनिक टोंस (टमस) नदी मानते है।महाराज सर्वनाथ खोह ताम्रपत्र में भी इस नदी का उल्लेख मानते है। यह नदी मैहर तहसील के झुकेही स्थान में कैमूर पर्वत श्रृखलाओं पर 2000 फुट की ऊँचाई पर स्थित तमसा कुण्ड से निकलती है।

नागौद राज्य में मिट्टी एवंकृषि

राज्य का अधिकाशं भाग पर्वतों से आवृत है जिसमें बडी बडी घाटियां और उपजाऊ मैदान है यहां अनेक प्रकार की मिट्टियां पायी जाती है। पथरीली उपजाऊ मिट्टि से लेकर मध्यम काली मिट्टी इस प्रदेश में विपरीत है जिसकी उत्तपत्ति चूने एवं लौहयुक्त शैलो से हुई है। यहां की मिट्टी चार प्रमुख भागों में बॉटी जा सकती है मैदानों की मिट्टी सामान्य रूप से काली है मिट्टी का परिणाम 25 से 45 प्रतिशत तक पाया जाता है काली मिट्टी में गेंहू और कपास बुलई मिट्टी में धान दोमट मिट्टी में गेहू और असर में उपज नहीं होती है। इन मिट्टीयों के स्थानीय नाम मार काबर पडवा एवं राकड है। यहां लाल एवं पीली मिट्टी साधारणतः साथ साथ मिलती है।

नागौद राज्य भूगर्भ खनिज संपदाओं से परिपूर्ण है। यहां समस्त गेंरू सीमेंट बनाने का प्रमुख साधन है इस का पत्थर इमारती नही है। संगमरमर पत्थर चूने का पत्थर इमारती पत्थर आदि पहाडों से प्राप्त होता है। राज्य का अधिकाशं हिस्सा जंगलों से आच्छादित था यहां के जंगलो में सरई तेंदू खैर सागोन साल बीज भदुआ हल्दू छिछड़ा पलाश अमरतास कल्लुबेल आदि के वृक्ष मिलते हैं।

काटेदार निम्नकोटि के वृक्ष भी पाए जाते है जैसे करोदा मुकुइया झबेर आदि। फल देने वाले वृक्ष आम जामुन महुआ आवला चार इत्यादि पाए जाते है। यहां की भूमि अनेक प्रकार की घासों से शोभायान है जिनमें दूब लावा कॉस आदि घासों की प्रधानता है।

यहां का सबसे बडा उधम कृषि है क्षेत्र की उपज को रबी एवं खरीफ की फसलों मे बाट सकते है खरीफ की फसल में पैदा होने वाले अनाजों में धान, मकई, ज्वार, बाजरा, मूंग, उडद, कोदो, कुटकी आदि प्रमुख है। रबी की फसल में उत्पन्न होने वाले आनाजों में गेहू जौ अरहर आदि है।

गेहू चना अलसी घी खली महुआ हर्रा रामराज गेरू इमारती लकडी पत्थर सागौन बॉस लकडी का कोयला इत्यादि राज्य से निर्यात किया जाता है औषधियों के रूप में हर्रा बहेरा आवला सतावर मुसली मेढकी धवई कहुआ मदार आदि शिलाजीत पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है महुआ फूल गाह एवंकिया जाता है ।यह क्षेत्र में आदिम संस्कृति की मूल धरा रहा है आदिवासियों ने अपने मूल स्वरूप को बनाएं रखकर दुर्गम क्षेत्रो में सहारा लिया जिनमें प्रमुख कोल बैगा भील अंगरिया मुइया आदि प्रसिद्ध है। किसी भी देश राज्य विकास में उसके भौगोलिक प्रकृतिक स्वरूप का प्रभाव पड़ता है जो उस क्षेत्र की सभ्यता तथा संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है भौगोलिक विशिष्टताओं से भरपूर यह भूखंड आवागमन के मागों से प्रभावित हुआ।

निष्कर्ष

नागौद राज्य के क्षेत्र के अध्ययन से स्पष्टतः ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र का भौगोलिक स्वरूप अत्याधिक सुखद है राज्य की स्थिति एवं विस्तार, धरातलीय बनावट, संरचना जलवायु एवं मिट्टी मानव के अनुकूल है तथा कृषि के लिए लाभप्रद। कृषि एवं भूमि का अटूट संबंध है क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि कृषि के लिए वरदान स्वरूप हो यहां का धरातलीय स्वरूप विविधता से युक्त है तथा इतिहास समृद्धशाली एवं भूमि अत्याधिक ऊर्वरा युक्त हैं जिसके कारण इसका मुख्य क्षेत्र समतल एवं कृषि योग्य है। इसकी अनुकूल जलवायु ही क्षेत्र सम्पूर्ण क्षेत्र का अधिक विकास का आधार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अवस्थी, नरेन्द्र, मोहन (2007) भौतिक भूगोल– लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन–मेरठ।
2. अग्रवाल एस.के. (1986) जिओइकॉलॉजी आफ मैलीन्यूट्रेशन स्टडी ऑपफ हरियाणा–चिलरना पब्लिकेशन–नई दिल्ली।
3. एडवोकेट, मदनलाल जिन्दल (1993) मध्य प्रदेश सहकारी सोसायटी अधिनियम–राजकमल पब्लिकेशन।
4. गौतम अलका– (2010) भारत का वृहद भूगोल, शरदा पुस्तक भवन– इलाहाबाद।
5. गौतम अलका (2010) भौतिक भूगोल रस्तोगी पब्लिकेशन–मेरठ ।
6. करीम मोहम्मद फजल; नागौद राज्य का भूगोल 1945 पृ.4।
7. बाल्मीकि रामायण;उत्तरकाण्ड ष्लोक 107
8. गोयल श्रीराम गुप्त और वाकाटक सम्राज्यों का युग 1988 पृ.92।
9. कुमार प्रमिला मध्यप्रदेष का प्रदेषिक भूगोल 1987 भोपाल पृ.165।
10. परिहार रामलखन सिंह प्रतिहार राजपूतों का इतिहास 1995 सतना पृ.99।
11. परिहार रामलखन सिंह प्रतिहार राजपूतों का इतिहास 1955 सतना पृ.7 ।
12. परिहार रामलखन सिंह प्रतिहार राजपूतों का इतिहास 1995 सतना पृ.102–103 ।
13. करीम मोहम्मद फजल नागौद राज्य का भूगोल 1945 पृ.11 ।
14. सरकार डी. सी. दिस्टडीज इन दी जाग्राफी ऑफ एषिएंट एण्ड मेडिवल इण्डिया 1962 पृ.47 ।
15. अली एस. एम. दि जाग्राफी ऑफ दी पुराणाज 1966 पृ.11 ।